साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 42, अगस्त(प्रथम) , 2018

दूसरी औरत के कद, वेदना, असुरक्षा, पारिवारिक, सामाजिक स्थिति का 'पंचकोण'

डॉ. मधु संधु

'पंचकोण' सिम्मी हर्षिता की पाँचवीं उपन्यास रचना है। इससे पहले वे 'सम्बन्धों के किनारे', 'यातना शिविर', 'रंगशाला' और 'जलतरंग' द्वारा उपन्यास जगत में अपना लोहा मनवा चुकी हैं। यहाँ भी संबंधों के कई कोण हैं, यातनाओं के असंख्य शिविर हैं। फिर भी पंचकोण की इस रंगशाला में जीवन का मृदुल जलतरंग बज ही रहा है। उपन्यास का केन्द्रबिन्दु चेन्नई के गाँव से रोटी-रोज़ी और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए राजधानी दिल्ली में आए कामगार लोगों की मानसिकता, संघर्ष और समस्याएँ हैं। मंजुल भगत का 'अनारो' और भीष्म साहनी का 'बसंती' भी घरेलू नौकरानियों के संघर्ष और विसंगतियों को लेकर लिखी गई रचनाएँ हैं। 'पंचकोण' में महानगर दिल्ली को कर्मक्षेत्र बनाने वाले पात्र मुस्लिम हैं और दिल्ली की मद्रास कालोनी या त्रिलोक नगर में रह रहे हैं। इस जीवन में गहरे पैठ कर सिम्मी ने यह सृजन किया है। दिल्ली शहर ने इन घरेलू नौकरानियों को सुविधाजनक छोटे- छोटे नाम या पहचान पत्र दिये हैं। अब हमीदानिसा रानी और करीमननिसा अनीता हो गई है। शरीयत से पुरुषों को चार-चार शादियों की इजाजत मिली हुई है। ससुर से लेकर जेठ, देवर सब की दो-दो

औरतें हैं। ऐसे में रानी का पति जानी कैसे पीछे रह सकता है। यह निम्नवर्गीय पितृ सत्ताक परिवार की नायिका प्रधान कहानी है। सारे संघर्ष के बावजूद जीवन उखड़ा- उलझा, बिखरा- बौराया, डांवाडोल सा है।

यूं तो उपन्यास में अनेक पात्र हैं। कलम दीदी, फूफु, ससुर, अनीता, यासमीन, रजिया, रानी, मधु आदि। लेकिन प्रमुख पात्र तीन ही कहे जा सकते हैं- जानी, रानी और मधु। जानी और रानी की शादी वर्षों पहले हुई थी। गाँव में उनके तीन बच्चे हैं और वे शहर में पैसा कमाने के लिए आए हुये हैं। अपने असफल विवाह के कारण जानी की बहन यासमीन की ननद मधु इनके पास महानगर दिल्ली आती है और विवाहित जानी उसकी किनारे तोड़ती, उफनती नदी की तरह इधर-उधर भटकती, रंग-बिरंगी, महकती, चटक, चंचल जवानी के चक्कर में पड़ जाता है। दोनों शाहरूख और काजोल हो जाते हैं। लैला- मजनू बन जाते हैं। ज़िंदगी हसीन हो जाती है। आम के आम, गुठलियों के दाम। दूसरी औरत का पहाड़ा पढ़ते वह अपनी जवानी की एक और पारी जीने लगता है। पत्नी बच्चों से रिश्ते फीके और बेकार लगने लगते हैं। चाहता है कि दूध में मक्खी, खिचड़ी में कंकड़ बनी पत्नी मर जाये या गाँव चली जाये। जबकि न उसे दूसरी औरत से विवाह में रूचि है और न उसके बच्चों में। प्रश्न यह भी है कि पुरुष अच्छा कैसे हो सकता है, औरत सुखी कैसे हो सकती है। उपन्यास के अंत तक आते- आते पत्नी रानी को

अपने सब्र का फल मिल जाता है। अपना घर, उच्च पदस्थ बच्चे, मान- सम्मान, चौधरानी सा रुतबा- सब ।

बात दूसरी औरत के दुखों की है। प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में भी दूसरी औरत तिलोत्तमा के जीवन में ऐसे ही दर्द, पीड़ा और त्रासदी के दरिया हैं। सिंदूर की चमक में कालिख की दमक है। 'पंचकोण' के आरंभ में तो मधु खलनायिका की तरह उभरती है। उसके पास जानी की बहन यासमीन की बड़ी ननद होने का पासपोर्ट है और इसका उपयोग तथा उपभोग करना वह जानती है। वह दबंग, धाकड़ और आक्रामक है। वह जानी से पत्नी को झाड़ू से पिटवाती है। बाल नुचवाती है। खरी- खोटी सुनवाती है। जानी के पास दूसरे विवाह का हक़ है, इसलिए रानी को उनके प्रेम-व्यापार और शारीरिक सम्बन्धों का पता चलते ही वह और भी सुखी और मुक्त हो जाती है। प्यार का जादू बनाए रखने के लिए वह जादू- टोटके भी अपनाती है। जानी उस पर दिलो-जान से मरता है। उसकी शादी की बात चलती है तो जाति की दुहाई दे तुड़वा देता है। बार- बार उसे गाँव भेजा जाता है, तो तड़पता- छटपटाता है, खाना-पीना छोड़ देता है। सन्यासी, वीतरागी बनने की सोचता है। उधार ले-ले कर उसे वापिस बुलाता है। त्रिलोकपुरी में अलग कमरा ले पिकनिकी अंदाज़ में उसके साथ रहता है। जानी का यही भावावेग उसे नए तेवर, नई निडरता, नई आशाए और दूसरे निकाह के रंगीन सपने दिखाता है। बिना निकाह के वह बच्चे को जन्म देती है। उसका आकर्षण मुग्धा नायिका से

कम नहीं। उसके प्यार में अतिरिक्त उत्साह, बल और मिठास है। पत्नी रानी है, तो वह महारानी है। मध्यवर्गीय औरतों की तरह वह कमजोर या शालीन नहीं है, मारकुटाई में बराबर हाथ- पाँव चलाती है, कंधे पर, पीठ पर धक्के देती है। गालियों का तो कोशागार है उसके पास।

उपन्यास दूसरी औरत के कद, वेदना, असुरक्षा, पारिवारिक, सामाजिक स्थिति का पंचकोण उपस्थित करता है। अधूरा सुख, अधूरी खुशी, अधूरी प्राप्ति। जिसे गाँव में झूठा निकाह और हरामी/ अवैध औलाद कहते हैं, उसे राजधानी दिल्ली में लिव-इन-रिलेशनशिप कहते हैं और बच्चे को लिव-इन की संतान कहते हैं। 'हरामी की माँ' और 'मर्द की रखैल' जैसे सम्बोधन उसे बर्दाश्त करने ही हैं। उसके दुखों का अंत नहीं। अन्याय, पाप, जुल्म, असुरक्षा दूसरी औरत के साथ ही/ भी है। वह अधकुचली नागिन सी तड़प रही है। बिना वैवाहिक लाइसेंस के उसके साथ रहना, उसको माँ बनाना, बिरादरी- गाँव में छीछालेदार होना- सब यातनामय है। उसे मिलता भी है तो क्या- एक आधा अधूरा पति- बचा-खुचा, दो हिस्सों में बंटा। वह भी जानी की प्रथम और अंतिम स्त्री होने का स्वप्न सँजोये है। उसके संतापों का अंत नहीं, न उसे अधिकार मिले हैं, न सम्मान, न परिवार का प्रेम, न घर, न संतान के लिए अभीप्सित स्थान। परस्पर वैर-विरोध और छीना-झपटी वाले रिश्ते एक बड़ा जाल-जंजाल बन जाते हैं। सभी लोग इकट्ठे एक तरफ होते हैं और वह अकेली एक तरफ। खाली हाथ होने का बोध उसे तड़पाता रहता है।

सिंगल मदर के फर्ज निभाना इतना आसान नहीं होता। औरत केवल रति या रमणी नहीं है। बढ़ती उम्र, बढ़ता अकेलापन, असुरक्षा, भविष्य की चिंता, गाँव की उबाऊ ज़िंदगी, दिशाहीनता, गाली-गुफ्त, मार-पीट- इसी चक्रवात में यह असहाय स्त्री फड़फड़ा रही है। अंततः निकाह हो जाता है, गले में कालीपोत भी डल जाता है, गाँव से शहर भी पहुँच जाती है, पर जानी का रानी और उसके बच्चों के प्रति झुकाव उसके अन्तर्मन की टीस को कुरेदता रहता है। उपन्यासकार ने निम्नवर्गीय दूसरी औरत के मन की उथल-पुथल का गहन मनोविश्लेषण किया है।

उपन्यास बुलंद आवाज़ में कहता है कि असामाजिक बंधन या विवाहित पुरुष से शादी दर्द, पीड़ा, त्रासदी, अपमान, उपेक्षा, घृणा, निरादर का ऐसा खुल जा सिमसिम है, जिसमें प्रविष्ट होना एक यातना शिविर को आत्मसात करना है। कोई विद्रोह, कोई मुक्तिकामना यहाँ कारगर नहीं। इस कालीपोत की चमक धुंधली ही रहती है।

पुस्तक	पंचकोण
लेखिका	सिम्मी हर्षिता
प्रकाशक	ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली
वर्ष	2018
मूल्य	300/रू

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें